Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۭ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ○

(अल् अन् आम :33)

अनुवाद : और सांसारिक जीवन केवल खेल तमाशा के अतिरिक्त और (कुछ नहीं) है और जो लोग संयम धारण करते हैं उनके लिए पीछे आने वाला घर निश्चित ही सर्वश्रेष्ठ है। तो फिर क्या तुम विवेक से काम नहीं लेते।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 9

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

29 रजब 1443 हिज्री कमरी, 03 अमान 1401 हिज्री शम्सी, 03 मार्च 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

दज्जाल मक्का और मदीना में प्रवेश नहीं करेगा

(1879) हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मसीह दज्जाल का आतंक मदीना में प्रवेश नहीं करेगा। उस दिन उसके साथ दरवाज़े होंगे और प्रत्येक दरवाज़े पर उसके फ़रिश्ते निर्धारित होंगे।

(1880) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मदीना के दरवाज़ों पर फ़रिश्ते होंगे। महमारी उस में दाखिल न होगी और न दज्जाल।

(1881) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : कोई भी शहर नहीं परन्तु दज्जाल जल्द उसे तबाह करेगा, सिवाए मक्का और मदीना के। उसके रास्तों में से कोई रास्ता भी एसा नहीं होगा परन्तु उस पर फ़रिश्ते खड़े होंगे। जो उसकी रक्षा करेंगे। फिर मदीना तीन पर अपने रहने वालों से कांपेगा तो अल्लाह हर काफ़िर और मुनाफ़िक़ को (युद्ध के लिए) निकाले गा।

(सही बुख़ारी, भाग 3 किताब फ़ज़ायल अल् मदीना, मुद्रित 2008 ई.)

★ ★ ★

जो ख़ुदा की प्रतिष्ठा और प्रताप और सम्मान के वास्ते जोश नहीं रखते उन की नमाज़ें झूठी हैं और उनके सज्दे व्यर्थ हैं

जब तक ख़ुदा के लिए जोश न हो ये सज्दे केवल मंतर जंतर ठहरेंगे जिनके माध्यम से ये स्वर्ग को लेना चाहता है

जैसा कि ख़ुदा को क़ुर्बानी के गोश्त नहीं पहुंचते, ऐसे ही तुम्हारे रुकू और सजदे भी नहीं पहुंचते जब तक उनके साथ श्रद्धा न हो

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश

ख़ुदा तआला की प्रतिष्ठा और प्रताप के प्रकट होने की इच्छा

अल्लाह तआला के निकट वलीउल्लाह और बरकतों वाला वही है जिसको यह जोश हासिल हो जाएगा। ख़ुदा चाहता है कि उसका प्रताप प्रकट हो। नमाज़ में जो سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْم اور سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى कहा जाता है वह भी ख़ुदा के जलाल के ज़ाहिर होने की इच्छा है। ख़ुदा की ऐसी प्रतिष्ठा हो कि उसका उदाहरण न हो। नमाज़ में तस्बीह और प्राथना करते हुए यही हालत ज़ाहिर होती है कि खुदा ने तरग़ीब दी है कि स्वभाविक जोश के साथ अपने कामों से और अपनी कोशिशों से दिखावए कि उसकी प्रतिष्ठा के समक्ष कोई वस्तु मुझ पर विजय नहीं पा सकती। यह बड़ी इबादत है जो उस की इच्छा के अनुसार जोश रखते हैं, वही ख़ुदा के सहायक कहलाते हैं और वही बरकतें पाते हैं। जो ख़ुदा की प्रतिष्ठा और जलाल और सम्मान के वास्ते जोश नहीं रखते उन की नमाज़ें झूठी हैं और उनके सज्दे व्यर्थ हैं। जब तक ख़ुदा के लिए जोश न हो ये सज्दे केवल मंतर जंतर ठहरेंगे जिनके माध्यम से यह स्वर्ग को लेना चाहता है। याद रखो कोई जस्मानी बात जिसके साथ श्रद्धा न हो, लाभदायक नहीं हो सकती। जैसा कि ख़ुदा को क़ुर्बानी के गोश्त नहीं पहुंचते, ऐसे तुम्हारे रुकू और सजदे भी नहीं पहुंचते, जब तक उनके साथ श्रद्धा न हो। ख़ुदा श्रद्धा को चाहता है ख़ुदा उनसे मुहब्बत करता है जो उसके सम्मान और प्रतिष्ठा के लिए जोश रखते हैं। जो लोग ऐसा करते हैं वह एक बारीक राह से जाते हैं और कोई दूसरा उनके साथ नहीं जा सकता। जब तक श्रद्धा न हो इन्सान तरक़्क़ी नहीं कर सकता। मानो ख़ुदा ने क़सम खाई है कि जब तक उसके लिए जोश न हो कोई आनंद नहीं देगा।

हर एक आदमी के साथ एक इच्छा होती है, पर मोमिन नहीं बन सकता जब तक शेष पृष्ठ 10 पर

आख़िरत के इंकार की वजह से विमुखता और गंभीरता का अभाव पैदा हो जाता है, दिल ज्ञान से वंचित हो जाते हैं

और इस वजह से स्पष्ट और विश्वसनीय बातों का इंकार भी इन्सान दिलेरी से करता है और ग़ौर करने की तरफ़ तवज्जा नहीं करता

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः नहल आयत :23 فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ की तशरीह में फ़रमाते हैं :

इस वाक्य में इस प्रश्न का उत्तर दिया है कि यदि ख़ुदा तआला का एक होना ऐसी स्पष्ट बात है तो लोग उसके एक होने का इंकार क्यों करते हैं और वह उत्तर यह है कि यह इंकार किसी दलील पर आधारित नहीं बल्कि अतिरिक्त इन तथ्यों के शिर्क में डूबे होना इस वजह से है कि ये लोग मृत्यु के बाद के जीवन के इंकार करने वाले हैं और इस इंकार की वजह से उनके अंदर संजीदगी बाक़ी नहीं रही क्योंकि जब ये अपने कर्मों को बिना परिणाम के समझते हैं तो उन्हें उनके अच्छा बुरा होने के विषय में विशेष चिंता पैदा नहीं होती और ज़िद और द्वेष में कोई बुराई नहीं देखते क्योंकि उनके ख़्याल में पकड़ तो कोई होनी नहीं। इस लिए आहिस्ता-आहिस्ता उनके दिल जाहिल और मुर्ख हो गए हैं और वह माद्दा समझ और हिदायत का उनमें बाक़ी नहीं रहा जो उस वक़्त इन्सान में पैदा होता है जबकि वह यह महसूस करता है कि मेरे कर्मों का कोई अहम परिणाम निकलने वाला है। अंततः आख़िरत के इंकार की वजह से विमुखता और गंभीरता का अभाव उनमें पैदा हो गया है और दिल ज्ञान से वंचित रह गए हैं और इस वजह से स्पष्ट और विश्वसनीय बातों का इंकार भी दिलेरी से कर देते हैं और ग़ौर करने की तरफ़ तवज्जा नहीं करते। अंततः इस जगह مُّنْكِرَةٌ के अर्थ इंकार करने वाले के नहीं बल्कि जाहिल और नावाक़िफ़ के हैं और ये बताया है कि मृत्यु के बाद के जीवन पर ईमान न होने के कारण से चूँकि संजीदगी से ग़ौर करने का एहसास नहीं, इसलिए इस आदत की वजह से दिलों से समझ का माद्दा जाता रहा है और उनको ज्ञान ही नहीं होता कि हमारा एक अक़ीदा दूसरे अक़ीदा के ख़िलाफ़ है।

दूसरा परिणाम मृत्यु के बाद के जीवन के इंकार का यह बताया कि उनमें घमंड पैदा हो गया है क्योंकि जिस व्यक्ति का कर्मों के प्रतिफल और दंड मिलने का विश्वास न हो शेष पृष्ठ 11 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की आयरलैण्ड की यात्रा, सितम्बर 2014 ई (भाग-2)

डबलिन शहर की ओर यात्रा

देश आयरलैंड महाद्वीप यूरोप के अत्यधिक उत्तर पश्चिम में औक़ियानूस समुद्र के पानियों में स्थित एक टापू है। 70273 मुरब्बा किलोमीटर के रकबा पर फैला हुआ यह मुल्क चार सूबों और26 काउंटियों पर आधारित है और इस की जनसंख्या 45 लाख है

हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला ने 29 से 31मार्च 1989 को आयरलैंड की यात्रा फ़रमाई थी

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

सुबह जब ये Fery आयरलैंड से बर्तानिया की ओर आ रही थी तो जमाअत आयरलैंड ने अपने दो प्रतिनिधि मलिक मंसूर अहमद साहब नैशनल सेक्रेटरी माल और असद इफ़्तिख़ार साहब मुहतमिम माल ख़ुद्दामुल अहमदिया भिजवाए थे ताकि फेरी से निकलने के बाद जो आगे डबलिन शहर तक की यात्रा है इस हवाले से कुछ कार्य फेरी में ही आर्गेनाईज़ कर लिए जाएं और उनकी गाड़ी फेरी से निकलते ही काफ़ले को Escort कर सके। ये दोनों सदस्य भी इस यात्रा में साथ थे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ों की अदायगी के बाद प्रेम पूर्वक इन दोनों लोगों के बारे में पूछा और उनसे बातचीत फ़रमाई।

लगभग तीन घंटे और बीस मिनट की यात्रा के बाद Ferry आयरलैंड की बंदरगाह डबलिन पर पहुंची और विशेष प्रोटोकोल प्रबन्ध के तहत हुज़ूर अनवर और क़ाफ़ला की गाड़ियां सबसे पहले जहाज़ से बाहर आईं और डबलिन शहर की ओर यात्रा हुई।

पोर्ट से रवाना होने के बाद छः बज कर बीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की होटल Castleknock तशरीफ़ आवरी हुई। यह होटल डबलिन शहर के क्षेत्र Castl knock में स्थित है। डबलिन में क़ियाम के मध्य हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ और क़ाफ़ले के सदस्य के क़ियाम का प्रबन्ध इसी होटल में किया गया था।

जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ गाड़ी से बाहर पधारे तो नैशनल सदर जमाअत आयरलैंड डाक्टर अनवर अहमद मालिक साहब मुबल्लिग़ इंचार्ज आयरलैंड इब्राहीम नोंन साहब और मुबल्लिग़ सिलसिला आयरलैंड रबीब अहमद मिर्ज़ा साहब ने हुज़ूर अनवर को स्वागतम कहा और हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। सदर लजना इमाइल्लाह तय्यबा मशहूद साहबा ने हज़रत बेग़म साहबा को स्वागतम कहा।

होटल के बाहरी सेहन में Dublin और Galway की जमाअतों से आए हुए लोग जिन में पुरुष महिलाएं बच्चे बूढ़े शामिल थे अपने प्यारे आक़ा के स्वागतम के लिए उपस्थित थे। बच्चे और बच्चियां अलग अलग ग्रुप की सूरत में स्वागतम के गीत प्रस्तुत कर रहे थे। सभी लोगों अपने हाथ हिलाते हुए अपने प्यारे आक़ा का स्वागत किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और होटल में अपने रिहायशी अपार्टमंट में तशरीफ़ ले गए।

नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा की अदायगी का प्रबन्ध होटल के एक हाल में किया गया था। सात बजकर पचपन मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पधार कर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

देश आयरलैंड महाद्वीप यूरोप के अत्यधिक उत्तर पश्चिम में औक़ियानूस समुद्र के पानियों में स्थित एक टापू है। 70273 मुरब्बा किलोमीटर के रकबा पर फैला हुआ यह मुल्क चार सूबों और26 काउंटियों पर आधारित है और इस की जनसंख्या 45 लाख है।

यहां के 95 प्रतिशत लोग रोमन कैथोलिक Roman Catholic धर्म से सम्बन्ध रखते हैं और बाक़ी पाँच प्रतिशत का सम्बन्ध दूसरे विभिन्न धर्मों और क़ौमों से है।

अंग्रेज़ों ने 12वीं सदी ईसवी में आयरलैंड पर अपना क़बज़ा किया। अंततः एक लम्बे प्रयास के बाद 1921 ई. में आयरलैंड अंग्रेज़ों से आज़ाद हुआ। परन्तु टापू का 1/6 भाग फिर भी बर्तानिया के अंतर्गत है। जिसे उत्तरी आयरलैंड कहा जाता है और यहां की राजधानी बेलफास्ट Belfast है।

देश आयरलैंड बुलंद-ओ-बाला सरसब्ज़ पहाड़ों, दिल मोह लेने वाली सुंदर झीलों और संसार के सुन्दर तरीन समुद्र के किनारों के कारण से पर्यटन के लिए प्रसिद्ध है।

यहां बहने वाले दरियाओं में से दरयाए Shannon सबसे लंबा दरिया है जिस की लंबाई 370 किलोमीटर है जो उत्तर पश्चिम से निकलता है और दक्षिण पश्चिम की ओर से बेहता हुआ औक़ियानूस समुद्र में मिल जाता है। जब कि दूसरा दरिया दरयाए Wicklow Liffey के पहाड़ों से रास्ता बनाता हुआ उत्तर पश्चिम से 121किलोमीटर की दूरी तै करते हुए डबलिन शहर के बीच से गुज़रता हुआ आइरिश समुद्र में जा गिरता है।

आयरलैंड में जमाअत और मिशन के निरंतर क़ियाम से पहले कुछ पाकिस्तानी अहमदी लोग यहां आकर आबाद हुए। सबसे पूर्व आदरणीय मुहम्मद हनीफ़ साहब इब्न आदरणीय चौधरी मुहम्मद शरीफ़ सरहिंदी 1976 ई. में नौकरी के हुसूल के लिए यहां आए और Galway शहर में रहने लगे। इसके बाद धीरे धीरे कुछ और अहमदी लोग आयरलैंड आए और विभिन्न शहरों में रहे।

मिशन के क़ियाम का जायज़ा लेने के लिए पहला दल जो आदरणीय नसीम अहमद बाजवा साहब मुबल्लिग़ यू.के और आदरणीय हिदायतुल्लाह बँगवी साहब

शेष पृष्ठ10 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हमने कुफ़्फ़ार के चैलेंज को स्वीकार करके उस अवसर पर निकलने का वादा किया है

इसलिए हम इससे पीछे नहीं हठ सकते और चाहे मुझे अकेला जाना पड़े मैं जाऊँगा और दुश्मन के मुक़ाबले पर अकेला डटा रहूँगा

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान ख़लीफ़ा-ए-राशिद सिद्दीक़-ए-अकबर हज़रत अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताएं और गुण

ग़ज़व-ए-बनू नज़ीर, ग़ज़व-ए-बदर अल् मौऊद, ग़ज़व-ए-बनू मुस्तलक़, लांछन की घटना और ग़ज़व-ए-अहज़ाब का वर्णन

आदरणीया मुबारका बेग़म साहिबा, पत्नी मुख़तार अहमद गोन्दल साहिब, आदरणीय मीर अब्दुल वाहिद साहिब और आदरणीय सय्यद वक़ार अहमद साहिब आफ़ अमरीका का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 28 जनवरी 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबूबक़र रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन चल रहा था और यही आज भी चलेगा। ग़ज़व-ए-इमराउल असद के बारे में लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हफ़्ता के दिन उहद से वापस तशरीफ़ लाए। रविवार के दिन जब फ़ज्र तलूअ हुई तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने अज़ान दी और बैठ कर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाहर तशरीफ़ लाने का इंतिज़ार करने लगे। इतने में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरो बिन औफ़ मुज़नी रज़ियल्लाहु अन्हु नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तलाश करते हुए आए। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ़ लाए तो उन्होंने खड़े हो कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर दी कि वह अपने घर वालों की तरफ़ से आ रहे थे। जब वह मलल में थे तो क़ुरैश ने वहां पड़ाव डाला हुआ था। मलल मक्का के रास्ते में मदीना से अट्ठाईस मील की दूरी पर एक स्थान का नाम है। और उन्होंने अबू सुफ़ियान और उसके साथियों को यह कहते हुए सुना कि तुम लोगों ने तो कुछ नहीं किया। तुम लोगों ने उन्हें नुक़्सान पहुंचाया अर्थात मुसलमानों को नुक़्सान पहुंचाया और तकलीफ़ पहुंचाई और फिर तुमने उन्हें छोड़ दिया और तबाह नहीं किया। कुफ़्फ़ार ने कहा कि इन मुसलमानों में कई ऐसे बड़े बड़े लोग बाक़ी हैं जो तुम्हारे मुक़ाबले के लिए इकट्ठे होंगे। अतः वापस चलो ताकि हम उन लोगों को जड़ से उखेड़ दें जो उन में बाक़ी रह गए हैं। सफ्वान बिन उमय्या इस बात से उन्हें रोकने लगा अर्थात काफ़िरों में वह बैठा था वह उन्हें रोकने लगा और कहने लगा कि हे क़ौम! ऐसा न करना क्योंकि वे लोग जंग लड़ चुके हैं और मुझे ख़ौफ़ है कि जो लोग जंग में आने से रह गए थे अब वह भी तुम्हारे मुक़ाबला में उनके साथ जमा हो जाऐंगे। तुम वापस चलो क्योंकि फ़तह तो तुम्हारी ही है क्योंकि मुझे ख़ौफ़ है कि यदि तुम वापस गए तो तुम शिकस्त खा जाओगे। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को बुलाया और उनको इस मुज़न्नी सहाबी की बात बताई तो इन दोनों ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुश्मन की तरफ़ चलें ताकि वे हमारे बच्चों पर हमला-आवर न हों। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सुबह की नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो आपने लोगों को बुलवाया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि वह यह ऐलान करें कि रसूलुल्लाह तुम्हें आदेश दे रहे हैं कि दुश्मन के लिए निकलो और हमारे साथ वही निकले जो पिछले दिन लड़ाई में शामिल था अर्थात उहद की लड़ाई में शामिल था। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना झंडा मंगवाया जो कि पिछले दिन से बंधा हुआ था। उसको अभी तक खोला नहीं गया था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह झंडा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को दे दिया और यह भी वर्णन किया जाता है कि हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो को दिया था।

(सुबुलुल हुदा भाग 4 पृष्ठ 308-309 غزوۃحمراءالاسد, दारुल क़ुतुब इल्मिया 1993 ई.) (मौजमुल बुल्दान, भाग 5 पृष्ठ 225 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

बहरहाल मुसलमानों का यह क़ाफ़िला जब मदीना से आठ मील की दूरी पर इमराउल असद पहुंचा तो मुशरिकीन को ख़ौफ़ महसूस हुआ और मदीना की तरफ़ लौटने का इरादा तर्क कर के वे वापस मक्का रवाना हो गए।

(सय्यदना अबू बक़र शख़्सियत और कारनामे अली मुहम्मद सलाबी अनुवादक उर्दू, पृष्ठ 113)

ग़ज़व-ए-बनू नज़ीर यह 4 हिज्री में था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा की एक मुख़्तसर जमाअत के साथ बनू नज़ीर के हाँ तशरीफ़ ले गए। इस बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायत मिलती हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां क्यों तशरीफ़ लेकर गए। इस लिए एक रिवायत के अनुसार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके पास बनू आमिर के दो मक़्तूलों की दियत वसूल करने के लिए गए थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ दस के क़रीब सहाबा थे जिनमें हज़रत

अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वहां पहुंच कर उनसे रक़म की बात की तो यहूदियों ने कहा कि हे अब्दुल क़ासिम! आप पहले खाना खा लीजिए फिर आपके काम की तरफ़ आते हैं। उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक दीवार के साथ बैठे हुए थे।

यहूदियों ने आपस में साज़िश की और कहने लगे कि इस व्यक्ति अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़त्म करने के लिए तुम्हें इस से बेहतर अवसर नहीं मिलेगा। इसलिए बताओ कौन है जो इस मकान पर चढ़ कर एक बड़ा पत्थर उनके ऊपर गिरा देता कि हमें उनसे छुटकारा मिल जाए। इस पर यहूदियों के एक सरदार अम्र बिन हज्जाश ने उसकी हामी भरी और कहा कि मैं इस काम के लिए तैयार हूँ परन्तु उसी वक़्त सल्लाम बिन मिश्कम नामी एक दूसरे यहूदी सरदार ने इस इरादे की मुख़ालिफ़त की और कहा यह हरकत कदापि मत करना। ख़ुदा की क़सम तुम जो कुछ सोच रहे हो उसकी उन्हें ज़रूर ख़बर मिल जाएगी। यह बात की है जबकि हमारे और उनके मध्य समझोता मौजूद है। फिर वह व्यक्ति जब ऊपर पहुंच गया अर्थात पत्थर गिराने वाला, ताकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पत्थर गिरा दे तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आसमान से इस साज़िश की ख़बर आई।

अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बरदार कर दिया कि यहूदी क्या करने वाले हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ोरन अपनी जगह से उठे और अपने साथियों को वहीं बैठा छोड़कर इस तरह रवाना हो गए जैसे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कोई काम है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तेज़ी के साथ वापस मदीना तशरीफ़ ले गए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना पहुंचने के बाद हज़रत मुहम्मद बिन मसलम रज़ियल्लाहु अन्हु को बनू नज़ीर के पास भेजा और यह पैग़ाम दिया कि मेरे शहर अर्थात मदीना से निकल जाओ। तुम लोग अब मेरे शहर में नहीं रह सकते और तुमने जो योजना बनाई थी वह ग़द्दारी थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यहूद को दस दिन की मोहलत दी लेकिन उन्होंने इंकार कर दिया और कहा कि हम अपना वतन कदापि नहीं छोड़ेंगे। इस संदेश पर मुसलमान जंग की तैयारी में लग गए। जब समस्त मुसलमान जमा हो गए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनू नज़ीर के मुक़ाबले के लिए निकले। जंग का झंडा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उठाया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके क़िलों का घेराव कर लिया और उनकी मदद के लिए कोई भी नहीं आया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनू नज़ीर की तरफ़ लश्कर भेजा तो इशा (रात) के वक़्त रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने दस सहाबा के साथ अपने घर वापस तशरीफ़ ले गए। उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस्लामी लश्कर की कमान एक रिवायत के अनुसार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के सपुर्द फ़रमाई जबकि दूसरी रिवायत के अनुसार यह सौभाग्य हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु के हिस्सा में आया। उधर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनका सख़्ती के साथ घेराव किए रहे और अल्लाह तआला ने उनके दिलों में अर्थात यहूदियों के दिलों में मुसलमानों का रोब पैदा कर दिया और अंततः उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरख़ास्त की कि उनको इस शर्त पर देश से निकलने की आज्ञा दे दी जाए और जान बख़शी कर दी जाए और सिवाए हथियारों के उन्हें ऐसा समस्त सामान ले जाने दिया जाए जो ऊंटों पर लादा जा सकता है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी यह शर्त और दरख़ास्त मंज़ूर फ़र्मा ली। एक रिवायत के अनुसार आपने पंद्रह दिन तक उनका घेराव किया जबकि कुछ रिवायत में दिनों की संख्यां में इख़तिलाफ़ पाया जाता है।

(उद्धरित सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 357 से 361 ग़ज़वा बनू अलनज़ीर, दारुल क़ुतुब इल्मिया 2002 ई.)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अंसार की आज्ञा से ग़ज़व-ए-बनू नज़ीर से हासिल होने वाला जो सारा माल-ए-ग़नीमत था वह मुहाजिरीन में तक़सीम कर दिया तो हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया हे अंसार की जमाअत अल्लाह तुम्हें जज़ाए ख़ैर अता करे। (सुबुलुल हुदा वर्रिशाद, भाग4 पृष्ठ 325 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

गज़वा बदरुल मौऊद :- यह 4 हिज्री का वाक़िया है। इस ग़ज़वा का सबब यह है कि अबू सुफ़ियान बिन हरब जब ग़ज़व-ए-अहद से वापस आने लगा तो उसने ब-आवाज़-ए-बुलंद कहा कि अगले वर्ष हमारी और तुम्हारी मुलाक़ात बदर अस्सफ़रा के स्थान पर होगी। हम वहां जंग करेंगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया : उसे कहो हाँ इं शा अल्लाह। इसी पर लोग जुदा हो गए। क़ुरैश वापस आ गए और उन्होंने अपने लोगों को इस वादे के बारे में बता दिया। बदर मक्का और मदीना के मध्य एक मशहूर कुँआं है जो वादी ए-सुफ़रा और जार जो स्थान है उसके मध्य स्थित है। बदर मदीना के दक्षिण में 150 किलो मीटर के फ़ासले पर स्थित है। ज़माना-ए-जाहिलीयत में इस जगह प्रत्येक वर्ष एक ज़ीकादा से आठ रोज़ तक एक बड़ा मेला लगा करता था। बहरहाल जूँ-जूँ वादे का वक़्त क़रीब आ रहा था अबूसुफ़ियान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ निकलने को नापसंद कर रहा था। इसको ख़ौफ़ पैदा हो रहा था। वह यही चाहता था कि इस निर्धारित वक़्त में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुलाक़ात न ही हो। अबूसुफ़ियान ज़ाहिर कर रहा था कि वह एक लश्कर-ए-जर्रार लेकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हमला-आवर होने की तैयारी कर रहा है ताकि यह ख़बर अहल मदीना तक पहुंचा दे कि वह एक बहुत बड़ा लश्कर जमा कर रहा है और अरब के कोने कोने में ख़बर फैला दी जाए ताकि मुसलमानों को इस से भयभीत किया जा सके।

(सुबुलुल हुदा वर्रिशाद, भाग 4 पृष्ठ 337 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.) (एटलस सीरतुन नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम,पृष्ठ 216 दारुस्सलाम 1424 हिज्री)

एक रिवायत के अनुसार हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो भी रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उन्होंने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! अल्लाह तआला अपने दीन को ग़ालिब करेगा। अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इज़्ज़त देगा। हमने क़ौम के साथ वादा किया था और हम उस की ख़िलाफ़वरज़ी पसंद नहीं करते। वे अर्थात कुफ़्फ़ार उसे बुज़दिली शुमार करेंगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वादा के अनुसार तशरीफ़ ले चलें। ख़ुदा की कसम इस में ज़रूर भलाई है। ये जज़बात सुनकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहुत ख़ुश हुए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब इस बात की ख़बर मिली अर्थात यह कि अबूसुफ़ियान इत्यादि के लश्कर की तैयारी के बारे में तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने पीछे मदीना का अमीर निर्धारित फ़रमाया। एक रिवायत के अनुसार अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल को अमीर निर्धारित फ़रमाया और अपना झंडा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को अता फ़रमाया और मुसलमानों के हमराह बदर की जानिब रवाना हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह पंद्रह सौ मुसलमान थे। मुसलमानों ने बदर के स्थान पर लगने वाले मेले में खरीदने और बेचने के व्यापर में काफ़ी नफ़ा कमाया और आठ रोज़ क़ियाम करने के बाद वापस मदीना आ गए।

(सुबुलुल हुदा वर्रिशाद, भाग 4 पृष्ठ 337 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.) (उद्धरित अल् तब्क़ातुल कुबरा, भाग 2 पृष्ठ 46 ग़ज़वा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बदर अल् मौउद, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2017 ई.)

वह मेला जो वहां लगा हुआ था मुसलमानों ने फिर इस में व्यापार भी किया कि यदि जंग हुई तो वह तो होनी है लेकिन यदि नहीं होती तो कम से कम व्यापार वहां हो जाए और इस से मुसलमानों को बड़ा लाभ हुआ। ग़ज़व-ए-उहद में अबूसुफ़ियान ने मुसलमानों को अगले वर्ष पुनः मिलने का जो चैलेंज दिया था उस की मज़ीद तफ़सील भी है और यह तफ़सील हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखी है। लिखते हैं कि ग़ज़व-ए-उहद के बाद "मैदान से लोटते हुए अबूसुफ़ियान ने मुसलमानों को यह चैलेंज दिया था कि अगले वर्ष बदर के स्थान पर हमारी तुम्हारी

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

जंग होगी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस चैलेंज को क़बूल करने का ऐलान फ़रमाया था। इस लिए दूसरे वर्ष अर्थात चार हिज्री में जब शवाल के महीना का अंत आया तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम डेढ़ हज़ार सहाबा की संख्या को साथ लेकर मदीना से निकले और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने पीछे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल को अमीर निर्धारित फ़रमाया। दूसरी तरफ़ अबूसुफ़ियान बिन हर्ब भी दो हज़ार क़ुरैश के लश्कर के साथ मक्का से निकला परन्तु बावजूद उहद की फ़तह और इतनी बड़ी जमीयत के साथ होने के उसका दिल भयभीत था और इस्लाम की तबाही के दर पर होने के बावजूद वह चाहता था कि जब तक बहुत ज़्यादा जमीयत का इंतिज़ाम न हो जाए वह मुसलमानों के सामने न हो। इस लिए अभी वह मक्का में ही था कि उसने एक व्यक्ति नईम नामी को जो एक ग़ैर जानिबदार क़बीला से सम्बन्ध रखता था मदीना की तरफ़ रवाना कर दिया और उसे ताकीद की कि जिस तरह भी हो मुसलमानों को डरा धमका कर और झूठ सच बातें बना कर जंग से निकलने के लिए रोके रखे। इस लिए ये व्यक्ति मदीना में आया और क़ुरैश की तैयारी और ताक़त और उनके जोशो ख़रोश के झूठे क़िस्से सुना सुना कर उसने मदीना में एक बेचैनी की हालत पैदा कर दी। यहाँ तक कि कुछ कमज़ोर स्वभाव लोग इस ग़ज़वा में शामिल होने से भयभीत होने लगे लेकिन जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने निकलने की तहरीक फ़रमाई और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी तक़रीर में फ़रमाया कि हम ने कुफ़्फ़ार के चैलेंज को क़बूल करके इस अवसर पर निकलने का वादा किया है इस लिए हम इससे पीछे नहीं हो सकते और चाहे मुझे अकेले जाना पड़े मैं जाऊँगा और दुश्मन के मुक़ाबले पर अकेला डटा रहूँगा तो लोगों का ख़ौफ़ जाता रहा और वे बड़े जोश और श्रद्धा के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमके साथ निकलने को तैयार हो गए।

बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम डेढ़ हज़ार सहाबा के साथ मदीना से रवाना हुए और दूसरी तरफ़ अबू सुफ़ियान अपने दो हज़ार सिपाहियों के हमराह मक्का से निकला लेकिन ख़ुदाई तसर्रुफ़ कुछ ऐसा हुआ कि मुसलमान तो बदर में अपने वादा के अनुसार पहुंच गए परन्तु क़ुरैश का लश्कर थोड़ी दूर आकर फिर मक्का को वापस लौट गया और इस का क़िस्सा यूं हुआ कि जब अबू सुफ़ियान को नईम की नाकामी का इल्म हुआ तो वह दिल में भयभीत हुआ और अपने लश्कर को यह तलक़ीन करता हुआ रास्ते से लौट कर वापस ले गया कि इस वर्ष सूखा बहुत है और लोगों को तंगी है इस लिए इस वक़्त लड़ना ठीक नहीं है। जब सहजता होगी तो ज़्यादा तैयारी के साथ मदीना पर हमला करेंगे। इस्लामी लश्कर आठ दिन तक बदर में ठहरा और चूँकि वहां ज़ीकादा के महीने के शुरू में प्रत्येक वर्ष मेला लगा था।'' (जिसका पहले वर्णन हो चुका है) तो "उन दिनों में बहुत से सहाबियों ने इस मेला में व्यापार करके काफ़ी लाभ कमाया। यहाँ तक कि उन्होंने इस आठ दिन के व्यापार में अपने मूलधन को दोगुना कर लिया। जब मेले का अंत हो गया और लश्कर क़ुरैश न आया तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बदर से कूच करके मदीना में वापस तशरीफ़ ले आए और क़ुरैश ने मक्का में वापस पहुंच कर मदीना पर हमले की तैयारियां शुरू कर दीं। यह ग़ज़वा ग़ज़व-ए-बद्रुल मौऊद कहलाता है।''

(सीरत ख़ातमुन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 529-530)

गज़व-ए-बनू मुस्तल्क एक है जो शाबान 5 हिज्री में हुआ। ग़ज़व-ए-बनू मुस्तलक़ का दूसरा नाम ग़ज़व-ए-मुरेसी भी है। (किताब अलमग़ाज़ी लिलवाकदी, भाग 1 पृष्ठ 341 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2013 ई.) बनू मुस्तलक खज़ा की शाख़ थी। ये क़बीला एक कुँवें के पास रहता था जिस को मुरेसी कहते थे। यह फ़ुरुअ से एक दिन की दूरी पर था और फ़ुरुअ और मदीना के मध्य क़रीबन 96 मील की दूरी थी।

(अल् तब्क़ातुल कुबरा, भाग 2, पृष्ठ 48 ग़ज़वा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल् मर्सी, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.) (अल् मुन्ज़िद ज़ेर माद्दा "बुरद")

अल्लामा इब्ने इसहाक के नज़दीक ग़ज़व-ए-बनू मुस्तलक़ 6 हिज्री में हुआ जबकि मूसा बिन उक्बा के नज़दीक 4 हिज्री में हुआ और वाक़दी कहता है कि यह ग़ज़वा शाबान 5 हिज्री में हुआ। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने इस को 5 हिज्री का ही लिखा है। बहरहाल जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक यह बात पहुंची कि क़बीला बनू मुस्तल्क ने मुसलमानों पर हमला करने का इरादा किया है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी तरफ़ शाबान 5 हिज्री में सात सौ अस्हाब के साथ चढ़ाई की। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुहाजिरीन का झंडा हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु के सपुर्द फ़रमाया। एक दूसरी रिवायत के अनुसार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुहाजिरीन का झंडा हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया और अंसार का झंडा हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु के सपुर्द फ़रमाया।

(अल् बिदाया वन्न हाया भाग 4 पृष्ठ 169-170 ग़ज़व बनू मुस्तलक़, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

लांछन लगाने की घटना इस के बारे में जो तफ़सील है वह इस तरह है कि ग़ज़व-ए-बनू मुस्तलक़ से वापसी पर हज़रत आयशा पुत्री हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो पर मुनाफ़क़ीन की तरफ़ से लांछन लगाया गया। यह वाक़िया तारीख़ में लांछन की घटना के नाम से प्रसिद्ध है। इस लिए सही बुख़ारी में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है। यह रिवायत जबकि एक सहाबी के विषय में पहले वर्णन हो चुकी है।

(ख़ुतबा जुमा फ़र्मूदा 14 दिसंबर 2018 ई., प्रकाशन अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 4 जनवरी 2019 ई., पृष्ठ 6- 7)

लेकिन यहां हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले से भी वर्णन करना ज़रूरी है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब किसी सफ़र पर रवाना होने का इरादा फ़रमाते तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी पत्नियों के मध्य क़ुरआ डालते हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से यह रिवायत है, और फिर जिसका क़ुरआ निकलता आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस को अपने साथ ले जाते। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक ग़ज़वा में हमारे मध्य क़ुरआ डाला जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किया था तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि मेरा क़ुरआ निकला। मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ गई हिजाब के आदेश के नाज़िल होने के बाद। कहती हैं मैं हौदा (लकड़ी का बना हौदा जो ऊंट या हाथी की पीठ पर बैठने के लिये रखा जाता है) में उठाई जाती और इसी में उतारी जाती। हम चलते रहे यहां तक कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने इस ग़ज़वा से फ़ारिग़ हुए और वापस तशरीफ़ लाए और हम मदीना के क़रीब पहुंचे तो एक रात आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने प्रस्थान का आदेश फ़रमाया। मैं खड़ी हुई जब लोगों ने प्रस्थान का ऐलान किया। फिर मैं चल पड़ी यहां तक कि लश्कर से आगे निकल गई। फिर जब मैं अपनी ज़रूरत से फ़ारिग़ हुई तो हौदज (लकड़ी का बना हौदा जो ऊंट या हाथी की पीठ पर बैठने के लिये रखा जाता है) की तरफ़ आई और मैंने अपने सीने को हाथ लगाया तो क्या देखती हूँ कि मेरा अज़फर के नगीनों का हार टूट कर गिर गया है। बहरहाल कहती हैं मैं वापस गई और अपना हार ढूढ़ने लगी। उसकी तलाश में मुझे समय लग गया और वे लोग आए जो मेरी सवारी को तैयार करते थे जिस पर मैं हौदज में बैठती थी। और उन्होंने मेरा हौदज उठाया और उसे मेरे ऊंट पर रख दिया जिस पर मैं सवार होती थी। कहती हैं कि उन्होंने समझा कि मैं उस में हूँ क्योंकि महिलाऐं उन दिनों में हल्की फुल्की हुआ करती थीं और उन पर ज़्यादा गोश्त नहीं होता था और वह थोड़ा सा ही खाना खाया करती थीं। बहरहाल लोगों ने जब उसे उठाया तो हौदज के बोझ को असामन्य नहीं समझा। उन्होंने इस को उठाया और मैं छोटी आयु की लड़की थी। उन्होंने ऊंट को उठाया और चल पड़े और मैंने अपना हार पा लिया इस के बाद कि लश्कर चला गया।

मैं उनके पड़ाव पर आई और वहां कोई भी नहीं था। फिर मैं अपने पड़ाव की तरफ़ गई जिस में मैं थी और मैंने ख़्याल किया कि वे मुझे नहीं पाएँगे तो मेरे पास वापस आएँगे। इस हाल में कि मैं बैठी हुई थी मेरी आँख लग गई और मैं सौ गई। सफ़वान बिन मुअत्तल सुलमी ज़कवानी लश्कर के पीछे थे। वह सुबह मेरे पड़ाव पर आए और उन्होंने एक सोते हुए इन्सान का वजूद देखा। वह मेरे पास आए और हिजाब के

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

आदेश से पहले उन्होंने मुझे देखा हुआ था। मैं उनके इन्ना लिल्लाह पढ़ने पर जाग उठी। जब उन्होंने अपनी ऊंटनी बिठाई तो उन्होंने उस ऊंटनी का पांव मोड़ा और जब वह ऊंटनी बैठ गई तो मैं उस पर सवार हो गई। और मेरी सवारी को लेकर चल पड़े यहां तक कि हम लश्कर में पहुंचे बाद इसके कि लोग ठीक दोपहर के वक़्त आराम करने के लिए पड़ाव किए हुए थे।

फिर जिसको हलाक होना था वह हलाक हो गया और इस लांछन को लगाने वाला अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल था। हम मदीना पहुंचे। मैं वहां एक महीना बीमार रही और लोग लांछन लगाने वालों की बातों में लगे रहे और मेरी बीमारी में यह बात मुझे बेचैन करती कि मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वह मेहरबानी नहीं देखती जो मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से आम तौर पर देखती थी जब मैं बीमार होती। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अन्दर तशरीफ़ लाते और सलाम कहते। फिर फ़रमाते तुम कैसी हो? मुझे इस वाक़िया का अर्थात लांछन की घटना का कुछ भी इलम नहीं था यहां तक कि जब मैं कमज़ोर हो गई तो मैं उम्मे मसतह मनासे की तरफ़ गईं जो हमारी मल मूत्र करने का स्थान था। हम न निकलते सिवाए रात से रात तक, रात का इंतिज़ार किया करते थे, और यह इस से पहले की बात है कि हमने अपने घरों के क़रीब शौचालय बनाए थे। घरों में उस शौचालय नहीं होते थे। बहरहाल कहती हैं इस से पूर्व हमारी हालत पहले अरबों की सी थी जो जंगल में या बाहर अलग जा कर मल मूत्र किया करते थे। मैं और उम्मे मसता पुत्री अबू रूहम दोनों गईं। हम चल रही थीं कि वह अपनी ओढ़नी से अटकी और उसने कहा मुसता हलाक हो गया। मैंने उसे कहा क्या ही बुरी बात है जो तुमने कही है। क्या तुम ऐसे व्यक्ति को बुरा कह रही हो जो बदर में मौजूद था तो उसने कहा हे भोली-भाली लड़की क्या आप ने सुना नहीं जो लोगों ने कहा। तब उसने मुझे लांछन वालों की बात बताई। इस पर मेरी बीमारी मज़ीद बढ़ गई।

फिर जब मैं अपने घर वापस आई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे पास तशरीफ़ लाए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सलाम किया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम कैसी हो? मैंने अर्ज़ किया मुझे अपने माता पिता के पास जाने की आज्ञा दें। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा कि मुझे आज्ञा दें कि माता पिता के पास चली जाऊं। मैं उस वक़्त चाहती थी कि मैं उन दोनों अर्थात अपने माता पिता की तरफ़ से ख़बर का यक़ीनी होना मालूम करूँ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे आज्ञा दे दी। मैं अपने माता पिता के पास आई तो मैंने अपनी माता से कहा लोग क्या बातें कर रहे हैं? उन्होंने कहा कि हे मेरी बेटी इस विषय में अपनी जान पर बोझ ना डालो। अल्लाह की क़सम! कम ही ऐसा हुआ है कि कभी किसी आदमी के पास कोई ख़ूबसूरत पत्नी हो जिसे वह मुहब्बत करता हो और इसकी सौतने हों और फिर उसके ख़िलाफ़ बातें न करें। मैं ने कहा सुब्हान-अल्लाह लोग ऐसी बात की चर्चा कर रहे हैं। उन्होंने अर्थात हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वर्णन फ़रमाया कि मैं ने वह रात इस तरह गुज़ारी कि सुबह हो गई और मेरे आँसू नहीं थमते थे और न मुझे ज़रा सी भी नींद आई।

फिर सुबह हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया। जब वह्यी में देरी हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन दोनों से अपनी पत्नी को छोड़ने (तलाक देने) के बारे में मश्वरा करना चाहते थे। जहां तक हज़रत उसामा का सम्बन्ध था तो उन्होंने मश्वरा दिया उसके अनुसार जो वह जानते थे कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से सम्बन्ध क्या है और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की हालत को भी जानते होंगे कि पवित्र और शुद्ध चरित्र तथा विचारों वाली महिला हैं। बहरहाल हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी हैं और अल्लाह की क़सम हम सिवाए भलाई के और कुछ नहीं जानते।

और जहां तक हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु का सम्बन्ध है तो उन्होंने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर कुछ तंगी नहीं रखी और इसके सिवा और महिलाऐं भी बहुत हैं और इस ख़ादिमा से पूछिए वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सच्च कह देगी। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बरीरा को बुलाया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बरीरा! क्या तुमने उस में कोई बात देखी जो तुम्हें शक में डाले? बरीरा ने कहा नहीं। उस की क़सम जिसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हक़ के साथ भेजा है मैंने उनमें इस से ज़्यादा कोई और बात नहीं देखी जिसको मैं बुराई समझूं कि वह कम उमर लड़की है, गूँधा हुआ आटा छोड़ कर सो जाती है। बकरी आती है और वह उसे खा जाती है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसी रोज़ खड़े हुए और अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल के बारे में माज़रत चाही और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कौन मुझे उस व्यक्ति के बारे में विवश समझेगा जिसने मेरे घरवालों के बारे में मुझे कष्ट दिया है। अल्लाह की क़सम! मैं अपने परिवार में सिवाए भलाई के और कोई बात नहीं जानता। और लोगों ने ऐसे व्यक्ति का वर्णन किया है जिसके विषय में भलाई के सिवा कुछ नहीं जानता और मेरे घर वालों के पास वह नहीं आता था परन्तु मेरे साथ। हज़रत साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और उन्होंने अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा की कसम मैं इस से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को विवश ठहराऊंगा। यदि वह ओस से है तो हम उसकी गर्दन मार देंगे और यदि वह हमारे भाईयों ख़ज़रज से है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमें इरशाद फ़रमाएं। हम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद के अनुसार करेंगे। इस पर हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हो गए और वह ख़ज़रज के सरदार थे और इस से पहले वह भले आदमी थे लेकिन उन्हें स्वाभिमान ने उकसाया और उन्होंने कहा तुमने ग़लत कहा। अल्लाह की क़सम! तुम उसे नहीं मॉरोगे और न इस पर ताक़त रखते हो। अर्थात आपस में क़बीलों की ठन गई। हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और उन्होंने कहा तुमने ग़लत कहा। अल्लाह की क़सम! अल्लाह की क़सम! हम उसे ज़रूर मारेंगे। तू मुनाफ़िक़ है और मुनाफ़िक़ों की तरफ़ से झगड़ता है। इस पर दोनों क़बीले ओस और ख़ज़रज भड़क उठे यहां तक कि वह लड़ने पर उतारू हो गए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मंच पर थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नीचे तशरीफ़ लाए। उनको धीमा किया यहां तक कि ख़ामोश हो गए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी ख़ामोश हो गए।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं मैं सारा दिन रोती रही। यह वाक़िया तो आपके इलम में आ गया लेकिन असल बात यह थी कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं जो कुछ भी हो रहा था वह तो होता रहा लेकिन मैं सारा दिन रोती रही। न मेरे आँसू थमे और न मुझे नींद आई। मेरे माँ बाप मेरे पास आए। मैं दो रातें और एक दिन रोई यहां तक कि मैंने गुमान किया कि यूं रोना मेरे जिगर को फाड़ डालेगा। आप रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया उस समय में कि वह दोनों अर्थात हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के माता पिता जो थे, मेरे पास बैठे हुए थे और मैं रो रही थी कि एक अंसारी महिला ने अंदर आने की आज्ञा चाही और मैं ने उसे आज्ञा दी। वह बैठी और मेरे साथ रोने लगी। हम इस हाल में थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और बैठ गए। जब से मेरे विषय में कहा गया और जो कहा गया आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे पास नहीं बैठे थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक महीना इसी तरीक़ पर रहे। मेरे इस विषय के बारे में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर कोई वह्यी नहीं हुई। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तशह्हुद पढ़ा। फिर फ़रमाया आयशा! मैं ने तुम्हारे बारे में यह बात सुनी है। यदि तुम बरी हो तो ज़रूर अल्लाह तआला तुम्हारी बरीयत फ़रमाएगा और यदि तुम से कोई लग़्ज़िश हो गई हो तो अल्लाह से मग़फ़िरत माँगो और उसके हुज़ूर तौबा करो क्योंकि बंदा जब अपने गुनाह का इक़रार करता है और फिर वह तौबा करता है तो अल्लाह भी उस पर रहम करता है।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी बात ख़त्म कर चुके तो मेरे आँसू थम गए यहां तक कि मुझे उनका एक क़तरा भी महसूस नहीं हुआ और मैं ने अपने बाप अर्थात हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि रसूलुल्लाह

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अः 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मेरी तरफ़ से जवाब दें। उन्होंने कहा ख़ुदा की कसम मैं नहीं जानता कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से क्या कहूं। फिर मैं ने अपनी माँ से कहा आप मेरी तरफ़ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जवाब दें जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है। उन्होंने कहा ख़ुदा की कसम मैं नहीं जानती मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से क्या कहूं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं मैं कम उमर लड़की थी, क़ुरआन ज़्यादा नहीं जानती थी तो मैं ने कहा ख़ुदा की कसम मुझे मालूम हो चुका है कि आप लोगों ने सुना है जो लोग बातें कर रहे हैं और आपके दिलों में वह बैठ गई है और आप लोगों ने उसे ठीक समझ लिया है और यदि मैं आप लोगों से कहूं कि मैं पवित्र हूँ और अल्लाह जानता है कि मैं पवित्र हूँ तो आप लोग मुझे इस में सच्चा नहीं समझेंगे और यदि मैं आपके पास किसी बात का इक़रार कर लूं और अल्लाह जानता है कि मैं पवित्र हूँ तो आप लोग मुझे सच्चा समझ लेंगे।

अल्लाह की क़सम! मैं अपना और आप लोगों का उदाहरण नहीं पाती सिवाए यूसुफ़ के पिता के कि जब उन्होंने कहा था فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ और अच्छी तरह सब्र करना ही मेरे लिए उचित है और जो बात तुम वर्णन करते हो उसके निवारण के लिए अल्लाह ही से मदद मांगी जा सकती है और उससे मदद मांगी जाएगी।

फिर मैं ने अपने बिस्तर पर रुख बदल लिया और मैं उम्मीद करती थी कि अल्लाह तआला मेरी पवित्रता ज़ाहिर करेगा लेकिन ख़ुदा की कसम मुझे गुमान नहीं था कि वह मेरे विषय में वह्यी नाज़िल करेगा। मैं अपने ख़्याल में इस से बहुत छोटी थी कि मेरे बारे में क़ुरआन में बात की जाएगी लेकिन मुझे उम्मीद थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नींद में कोई स्वप्न देखेंगे कि अल्लाह मुझे पवित्र क़रार देता है। अल्लाह की क़सम! आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने बैठने की जगह से अलग नहीं हुए थे और न घर वालों में से कोई बाहर गया था यहां तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर वह्यी नाज़िल हुई और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर वह शिद्दत की कैफ़ीयत तारी हुई जो वह्यी के वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हुआ करती थी। यहां तक कि सर्दी के दिन में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पसीना मोतियों की तरह टपकता था। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह अवस्था जाती रही तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुस्कुरा रहे थे और पहली बात जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुझ से यह फ़रमाना था कि आयशा! अल्लाह की प्रशंसा वर्णन करो क्योंकि अल्लाह ने तुम्हारी पवित्रता प्रकट कर दी है और मेरी माँ ने मुझसे कहा उट्ठो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जाओ। मैंने कहा नहीं अल्लाह की क़सम मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास नहीं जाऊँगी और अल्लाह के सिवाए किसी की प्रशंसा नहीं करूँगी। तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया : اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ (अल् नूर : 12) निसंदेह वे लोग जिन्हों ने एक बड़ा झूठा आरोप लगाया था तुम्ही में से एक गिरोह है। जब अल्लाह ने मेरी पवित्रता में यह नाज़िल फ़रमाया तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पिता हज़रत अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा और वह मुसतह बिन उसासा को उसके क़रीबी होने के कारण ख़र्च दिया करते थे, ग़रीब आदमी था इस को ख़र्च दिया करते थे हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि अल्लाह की क़सम मैं मुसतह को कभी ख़र्च नहीं दूँगा बाद इस के जो उसने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में कहा है। तो अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़रमाया وَلَا يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ (अल्नूर : 23) और तुम में से साहब-ए-फ़ज़ीलत और साहब-ए-तौफ़ीक़ अपने क़रीबियों और मिस्कीनों और अल्लाह की राह में ख़र्च करने वालों को कुछ न देने की क़सम न खाएं। अतः चाहिए कि वे माफ़ कर दें और अनदेखा करें। क्या तुम यह पसंद नहीं करते हो कि अल्लाह तुम्हें बख़श दे और अल्लाह बहुत बख़शने वाला और बार-बार रहम करने वाला है।

हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया क्यों नहीं। अल्लाह की क़सम मैं ज़रूर पसंद करता हूँ कि अल्लाह मुझे बख़श दे तो उन्होंने मुसतह को दुबारा देना शुरू कर दिया। अर्थात हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो जो ख़र्च करते थे वह ख़र्च दुबारा शुरू कर दिया। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे विषय में अर्थात हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा करते थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ज़ैनब को कि हे ज़ैनब! तुम क्या जानती हो अर्थात हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में तुम्हारी क्या राय है? तो उन्होंने अर्ज़ किया : हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं अपनी सुनने की शक्ति और देखने की शक्ति महफ़ूज़ रखती हूँ। अल्लाह की क़सम मैं ने उनमें ख़ैर ही देखी है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि अब यही ज़ैनब वह थीं जो मेरा मुक़ाबला किया करती थीं और अल्लाह ने उन्हें परहेज़गारी की वजह से बचा लिया।

(सही अलबुख़ारी, किताब अल् शहादात, बाब تعديل النساء بعضهن بعضًا, हदीस 2661)

यह सही बुख़ारी की एक लंबी रिवायत है।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "ख़ुदा तआला ने अपने अख़लाक़ में यह दाख़िल रखा है कि वह वईद की भविष्यवाणी को तौबा और अस्तग़फ़ार और दुआ और सदक़ा से टाल देता है इसी तरह इन्सान को भी उसने यही अख़लाक़ सिखाए हैं। जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ और हदीस से यह साबित है कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के विषय में मुनाफ़ेक़ीन ने जो आरोप लगाया घटना के विपरीत लांछन लगाया तो उसके वर्णन में कुछ सीधे साधे लोग भी शरीक हो गए थे। एक सहाबी ऐसे थे कि वह हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु के घर से दो समय की रोटी खाते थे। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी इस गल्ती पर क़सम खाई थी और कभी न तोड़ने वाले वादे के तौर पर अह्द कर लिया था कि मैं इस अनूचित हरकत की सज़ा में इस को कभी रोटी नहीं दूँगा। इस पर यह आयत नाज़िल हुई थी وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ (अल्नूर : 23) तब हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने इस वादे को तोड़ दिया और बदस्तूर रोटी लगा दी। "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं" "इसी आधार पर इस्लामी अख़लाक़ में यह दाख़िल है कि यदि वईद के तौर पर कोई अह्द किया जाए तो उसका तोड़ना हुस्न-ए-अख़लाक़ में दाख़िल है। उदाहरणतः यदि कोई अपने सेवकों के विषय में कसम खाए कि मैं उसको ज़रूर पचास जूते मारूँगा तो उसकी तौबा और तज़र्रु पर माफ़ करना इस्लाम की सुन्नत है ताकि अल्लाह की विशेषताओं की भांति तुम्हारी विशेषताएं हो जाएँ परन्तु वादे का तौड़ना उचित नहीं। वादा तौड़ने पर पूछा जाएगा परन्तु वईद के त्यागने पर नहीं।"

(ज़मीमा बराहीन-ए-अहमदिया भाग 5, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 21 पृष्ठ 181)

यह एक अलग मज़मून है कि वादा किया है और वईद किया है और वह पहले भी एक बार वर्णन हो चुका है।

बहरहाल अब वर्णन है ग़ज़व-ए-अहज़ाब का जो शवाल पाँच हिज्री में हुआ। क़ुरैश मक्का और मुसलमानों के मध्य यह तीसरा बड़ा युद्ध था जो ग़ज़व-ए-ख़ंदक़ भी कहलाता है। यह ग़ज़वा शवाल 5 हिज्री में हुआ। चूँकि क़ुरैश, यहूद-ए-ख़ैबर और बहुत से गिरोह इस में जत्था बंदी करके मदीना मुनव्वरा पर चढ़ आए थे इसलिए क़ुरआन-ए-करीम में वर्णित नाम अहज़ाब से भी यह युद्ध जाना जाता है अर्थात ग़ज़व-ए-एहज़ाब।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यहूद के क़बीला बनू नज़ीर को निर्वासित कर दिया तो वह ख़ैबर चले गए। उनके शरीफ़ और सम्मानितों में से कुछ आदमी मक्का रवाना हुए। उन्होंने क़ुरैश को इकट्ठा किया और उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाबला के लिए उभारा। इन लोगों ने क़ुरैश से समझोता किया और सबने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जंग पर सहमती की और इस के लिए उन्होंने एक वक़्त का वादा कर लिया। बनू नज़ीर के वे लोग क़ुरैश के पास से निकल कर क़बीला ग़त और सुलेम के पास आए और उनसे भी इस प्रकार का समझोता किया और फिर वह लोग उनके पास से रवाना हो गए। क़ुरैश तैयार हो

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD
S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

गए उन्होंने विभिन्न क़बायल को और उन अरबों को जो उनके हलीफ़ थे जमा किया तो चार हज़ार हो गए। अबू सुफ़ियान बिन हर्ब उनका सरदार था। रास्ता में अन्य क़बायल के लोग भी इस लश्कर से मिलते रहे। यूं इस लश्कर की मजमूई संख्यां दस हज़ार हो गई।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उन लोगों के मक्का से रवाना होने की ख़बर पहुंची तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम को बुलवाया और उन्हें, सहाबा को, दुश्मन की ख़बर दी और इस विषय में उनसे मश्वरा किया। इस पर हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़ंदक़ की राय दी जो मुसलमानों को पसंद आई। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में मदीना की उत्तरी सिम्त खुली थी। बाक़ी तीन अतराफ़ में मकानात और नख़लिस्तान थे जिनमें से दुश्मन गुज़र नहीं सकता था। इस लिए खुली सिम्त में ख़ंदक़ खोद कर शहर के बचाव का फ़ैसला हुआ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीन हज़ार मुसलमानों के साथ मिलकर ख़ंदक़ खोदनी शुरू की। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अन्य मुसलमानों के साथ ख़ंदक़ खोदने का काम कर रहे थे ताकि मुसलमानों का हौसला बढ़े। कुल छः दिनों में यह ख़ंदक़ खोदी गई। इस ख़ंदक़ की लंबाई तक़रीबन छः हज़ार गज़ या कोई साढ़े तीन मील थी।

(उद्धरित अल् तब्क़ातुल कुबरा लेइब्ने साअद भाग 2 पृष्ठ 50-51 ग़ज़वा रसूलुल्लाह अलख़नदक ... दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2017 ई.)(एटलस सीरतुन नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 278 दारुस्सलाम 1424 हिज्री)

हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ साथ रहे। ख़ंदक़ खोदने के दौरान हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो अपने कपड़ों में मिट्टी उठाते थे और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ंदक़ खोदने में भी बाक़ी सहाबा के साथ मिल कर काम किया ताकि ख़ंदक़ की खुदाई का काम निर्धारित वक़्त के अंदर जल्द से जल्द पूर्ण हो जाए।

(अल्ख़लीफ़ अव्वल अबू बक़र सिद्दीक़, दक़तूर अली मुहम्मद अल् सलाबी से, पृष्ठ 65-66 فی الخندق و بنی قریظة., दारुल मारूफ़ बेरूत, 2006 ई.)

ख़ंदक़ खोदने में कोई मुसलमान पीछे नहीं रहा और हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को जब टोकरियां नहीं मिलतीं तो जल्दी में अपने कपड़ों में मिट्टी उठाते थे और वे दोनों न किसी काम में और न यात्रा एवं पड़ाव में एक दूसरे से जुदा होते थे। (सुबुलुल हुदा वर्रिशाद, भाग 4 पृष्ठ 365 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ंदक़ की खुदाई में सख़्त मेहनत की। कभी कुदाल चलाते और कभी बेलचे से मिट्टी जमा करते और कभी टोकरी में मिट्टी उठाते। एक दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बहुत ज़्यादा थकावट हो गई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बैठ गए। फिर अपने बाएं पहलू पर पत्थर का सहारा लिया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नींद आ गई तो हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिरहाने खड़े हो कर लोगों को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास से गुज़रने से रोकते रहे कि कहीं वे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जगा न दें।

(सुबुलुल हुदा वर्रिशाद,भाग 4 पृष्ठ 367 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

क़ुरैश और उस के हामियों के दस हज़ार के लश्कर ने मदीना के मुसलमानों का जब मुहासिरा कर लिया तो इस मुहासिरा के ज़माना में हज़रत अबूबक़र मुसलमानों के लश्कर के एक हिस्सा की क़ियादत कर रहे थे। बाद में इस जगह जहां हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़ियादत फ़रमाई एक मस्जिद बना दी गई जिसे मस्जिद सिद्दीक़ कहा जाता था।

(सय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो, अल् हाज हकीम ग़ुलाम नबी, पृष्ठ 41 प्रकाशन आर, आर प्रिंटर लाहौर 2010 ई.)

यह वर्णन अभी आगे भी इंशा अल्लाह चलेगा। इस वक़्त में कुछ मरहूमीन का वर्णन भी करना चाहता हूँ। इस में पहला वर्णन है आदरणीया मुबारका बेग़म साहिबा जो मुख़तार अहमद गोन्दल साहिब की पत्नी थीं। 11जनवरी को 93वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। चौधरी ग़ुलाम मुहम्मद गोन्दल साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बहू थीं। जमाअती ख़िदमत बहुत शौक़ से बजा लाती थीं। अपने चक 99 शुमाली की सदर लजना भी रही हैं। नमाज़ रोज़े की पाबंद, नेक और ग़रीबों का ख्याल रखने वाली और मुख़लिस महिला थीं। सारी उम्र बच्चों और बड़ों को क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाने की तौफ़ीक़ पाई। मरहूमा मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में पाँच बेटे और तीन बेटियां शामिल हैं। इफ़्तिख़ार अहमद गोन्दल साहिब मुरब्बी सिलसिला सैर लियोन आपके बेटे हैं और फ़वाद अहमद साहिब मुरब्बी सिलसिला की दादी थीं। इस के अतिरिक्त आपके ख़ानदान में पोतों पोतियों में और भी मुरब्बियान हैं, वाक़फ़ीन-ए-ज़िंदगी हैं। अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी दुआएं अपनी नसल के लिए भी क़बूल फ़रमाए।

दूसरा वर्णन मीर अब्दुल वाहिद साहिब का है। जिनकी वफ़ात बारह 13 जनवरी की रात को हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। 58 वर्ष उनकी आयु थी। उनके ख़ानदान में अहमदियत का आरम्भ उनके पड़दादा मीर अहमद दीन साहिब के माध्यम से हुआ जिन्हों ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में 1911 ई. में अहमदियत क़बूल की थी। अपने ख़ानदान में अकेले अहमदी थे इस तरह ननिहाल की तरफ़ से अहमदियत का आरम्भ उनके नाना हज़रत शैख़ अल्लाह बख़श साहब रज़ियल्लाहु अन्हु आफ़ बनू से हुआ। अब्दुल वाहिद साहिब के दादा का नाम अब्दुल करीम साहिब था। उन्हें तब्लीग़ का बहुत शौक़ था। इसलिए उनके यह दादा पिशावर में मौलवी अब्दुल करीम के नाम से मशहूर थे। ज़ाती अध्यन बहुत करते थे। अपनी लाइब्रेरी भी बनाई हुई थी। 1974 ई. में जब असैंबली में वफ़द ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह की सरकर्दगी में पेश हो रहा था तो कुछ नायाब कुतुब की ज़रूरत थी जो उनकी लाइब्रेरी से मिलीं। उनके बहनोई ने यह रिवायत दी है। 9 सितंबर 2020 ई. को तौहीन रिसालत का झूठा इल्ज़ाम लगने की वजह से 295-c के तहत मीर अब्दुल वाहिद की फ़ैमिली के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा बनाया गया और मुल्लाओं और आम लोगों ने उनके घर का घेराव कर लिया लेकिन पुलिस ने उनको फ़ैमिली के साथ किसी तरह वहां से निकाला और रावलपिंडी पहुंचा दिया। कुछ दिनों के बाद रावलपिंडी से ही उनके घर से रात को छापामार कर पुलिस ने उनके बेटे अब्दुल मजीद साहिब को गिरफ़्तार कर लिया।

अल्लाह तआला ने मीर अब्दुल वाहिद साहिब को दो बेटों और एक बेटी से नवाज़ा था। उनके एक बेटे जिनका अभी वर्णन किया है अब्दुल मजीद साहिब को गिरफ़्तार कर लिया था। अभी तक इस्लाम अहमदियत की खातिर कैदी हैं। जेल में ही थे जब उनके पिता की वफ़ात हो गई, यह शामिल नहीं हो सके। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए और उनके परिजनों को भी सब्र और हौसला अता फ़रमाए। और जो बेटे उनके कैद में हैं, बीस वर्ष तक़रीबन आयु है, अल्लाह तआला उनकी रिहाई के भी जल्द सामान पैदा फ़रमाए।

तीसरा वर्णन है आदरणीय सय्यद वक़ार अहमद साहिब का जो अमरीका में थे। 17 जनवरी को अट्ठावन वर्ष की आयु में हार्ट-अटैक की वजह से उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। वक़ार अहमद की पत्नी हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु की पड़ नवासी, उनके नवासे की बेटी और हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु की पोती की बेटी हैं। इस लिहाज़ से उनका सम्बन्ध हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़ानदान से है। उनकी शादी शाह साहिब के हाँ हुई। इस ख़ानदान में वक़ार शाह साहिब के दादा सय्यद डाक्टर ज़हूर शाह साहिब को रिटायरमैंट के बाद वक़्फ़ करने की तौफ़ीक़ मिली और फिजी में ख़िलाफ़त सालसा के दौर में मुबल्लिग़ के तौर पर कुछ वर्ष रहे। फिर रब्वाह में भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। जमाअत से और ख़िलाफ़त से वफ़ा रखने वाला ख़ानदान है।

उनकी पत्नी शाज़ीया ख़ान कहती हैं कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे मुझे रिश्ते के लिए दुआ के लिए कहा और फिर दुआओं के बाद जब मैंने हामी भरी तो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे ने इस रिश्ते को मंज़ूर फ़रमाया। अर्थात हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे ने यह रिश्ता तै करवाया था। लिखती हैं कि वक़ार साहिब ने तेंतीस वर्ष की शादीशुदा ज़िंदगी में मेरी उंगली पकड़ कर मुझे चलाया। प्रत्येक ज़रूरत और ख़ाहिश का ख़्याल रखा। अद्वितीय बाप थे। कभी अपने लिए कुछ नहीं किया और सादा से इन्सान थे। अपनी कोई ख़ाहिश नहीं थी और यदि कोई थी भी तो घर वालों पर क़ुर्बान कर देते थे। कहती हैं कि मेरे लिए सबसे ख़ूबसूरत दिन वह था जब उन्होंने किसी को निहायत फ़ख़र से यह कहा कि मैं मस्जिद जाता हूँ और अपना अह्द दोहराता हूँ और मेरे लिए इस अह्द को निभाने से ज़्यादा ज़रूरी कुछ नहीं है। प्रत्येक चीज़ में इस अह्द पर क़ुर्बान कर सकता हूँ और यह केवल बातें नहीं हैं बल्कि मैंने देखा है, मैं जानता हूँ कि एक कड़ी परीक्षा उन पर आई तो उन्होंने इस अह्द का सम्मान किया और दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने का जो अह्द किया था और जो

निभाते रहे, उसको पूरा किया और किसी रिश्ता की पर्वा नहीं की। ख़िलाफ़त की आज्ञा पालन से कभी बाहर क़दम नहीं रखा।

कहती हैं कि जो बात उनको कभी समझ नहीं भी आती थी तो उसकी भी इताअत करते थे कि हमारा काम आज्ञाकारिता करना है। निहायत शुक्रगुज़ारी वाले स्वभाव के थे और कहती हैं हर वक़त मुझे भी इस की तलक़ीन करते थे। माली क़ुर्बानी में कभी कोताही नहीं की। उनके बेटे अज़ीज़म सय्यद आदिल अहमद, जो अब मुरब्बी सिलसिला हैं जामिआ अहमदिया कैनेडा से उन्होंने शाहिद पास की है। वह कहते हैं कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मेरे पिता एक सादा और मुख़लिस इन्सान थे। कभी अपने आपकी फ़िक्र नहीं की और हमेशा सब बच्चों और अम्मी की ज़रूरीयात का ख़्याल रखा। कोई अच्छी चीज़ अपने लिए नहीं लेते थे बल्कि कई दफ़ा याददेहानी करवानी पड़ती थी कि अपने ऊपर भी ख़र्च कर लिया करें। मुराबियान और निज़ाम-ए-जमाअत का बहुत सम्मान किया करते थे। उनके सुसर महमूद अहमद ख़ान साहब जो हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु के नवासे और हज़रत नवाब मुबारका बेग़म साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा के पोते हैं वे लिखते हैं कि वक़ार अर्थात उनके दामाद एक निहायत ख़ुशअख़लाक़ और मेहमान नवाज़ इन्सान था। कहते हैं कभी उनके माथे पर बल नहीं देखा जितने मर्ज़ी मेहमान आ जाएं और जो भी हो जाए उनके साथ कोई बात भी हो जाएगी। फिर कहते हैं कि मुझे पुनः याद करवाया कि शुरू में अपने बेटे आदिल की लापरवा, ज़िंदगी में जो लापरवाई होती थी, उसको बार-बार टोका करता था लेकिन जब आदिल ने वक़्फ़ किया तो फिर वक़ार का रवैय्या मुकम्मल बदल गया और फिर यही बच्चा उनका सबसे क़रीबी बन गया और उसका बहुत इज़्ज़त और एहतिराम करने लग गए।

मुनीर अहमद साहिब साबिक़ अमीर जमाअत अबू ज़ोहबी लिखते हैं कि वक़ार साहिब अबू ज़ोहबी में काम करते रहे। मुलाज़मत के दौरान फ़ैमिली के साथ वहां रहे। इस दौरान में उनके घरेलू सम्बन्ध भी क़ायम हुए। एक प्रोफ़ैशनल थे। बैंक में काम करने वाले बैंकर थे। स्वभाव की सादगी और मिलनसारी आपका ख़ास वस्फ़ था। सिलसिला और निज़ाम से गहरा प्रेम रखते थे। ख़िलाफ़त के लिए हद दर्जा की मुहब्बत और इताअत के जज़बा से सरशार थे। कहते हैं अमरीका जाने तक अपनी रिहायश गाह को जमाअती ज़रूरियात के लिए बड़ी बशाशत से पेश किया जो जुमा और अन्य इजतिमाआत के लिए काम आती रही। जमाअत के इंटरनल आडीटर के तौर पर भी उन्हें काम करने की तौफ़ीक़ मिली। इसी तरह सय्यद हाशिम अकबर ने भी लिखा है कि मैंने उनके साथ काम किया और हमेशा मिलनसार और ख़िदमत-ए-ख़लक़ की भावना से सरशार पाया। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनके बच्चों को भी नेकियां करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और उनके अपने बच्चों के लिए दुआएं भी क़बूल फ़रमाए।

इन सब के जनाज़े में नमाज़ों के बाद पढ़ाऊंगा।

इंशा अल्लाह।

★ ★ ★

पृष्ठ01 का शेष

वह निडर हो जाता और जो निडर हो जाए वह सच्चाई को स्वीकार करने की ज़रूरत महसूस नहीं करता। उद्देश्य قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ के शब्दों से वास्तव में दो प्रकार के मुशरिकों का वर्णन फ़रमाया है एक वह हैं जिनसे संजीदगी से ग़ौर करने का माद्दा जाता रहा है

और जहालत में ग्रस्त हो गए हैं। अतः दिल के बीमार हो जाने के कारण वह सच्चाई के समझने से क़ासिर रह गए हैं और दूसरे वे लोग जो दलायल सुन कर एक ख़ुदा के अक़ीदा को दिल में तो सही समझते हैं लेकिन तकब्बुर और ज़िद की वजह से उसका इक़रार नहीं करते क्योंकि प्रतिफल और दंड के इंकार की वजह से वह बे-ख़ौफ़ हैं और सच्चाई के इंकार में कोई नुक़्सान नहीं देखते।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4, पृष्ठ 153 प्रकाशन 2010 क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ02 का शेष

मरहूम (जनरल सेक्रेटरी जमाअत यू.के) पर आधारित थी। उनको अगस्त 1983 ई. को आयरलैंड भिजवाया गया। इस दल ने डबलिन और गालवे दो शहरों की यात्रा की और मिशन के क़ियाम का जायज़ा लिया।

यहां मिशन के क़ियाम के प्रयास जारी रहें । आदरणीय कलीम अहमद साहब और उनके बेटे नदीम अहमद साहब पर आधारित वाकफ़ीन का पहला दल 12 अगस्त 1985 ई. को लंदन से आयरलैंड के लिए रवाना हुआ। इस दल ने डबलिन और गालवे शहर की यूनीवर्सिटीयों और कॉलिजों की यात्रा की और इलमी हलक़ों से सम्पर्क करके जमाअत का परिचय करवाया। अख़बारी नुमाइंदों से मुलाक़ात की जिसके परिणाम में कई अख़बारात ने उनके इंटरव्यू प्रकाशित किए।

आदरणीय रशीद अहमद राशिद साहब पहले मुबल्लिग़ के तौर पर 15 अगस्त 1988 ई. को लंदन से आयरलैंड पहुंचे और आरंभ में मुहम्मद हनीफ़ साहब सदर जमाअत आयरलैंड के हाँ क़ियाम करके नमाज़-ए-जुमा और अन्य नमाज़ों के बाजमाअत क़ियाम का एहतिमाम किया और केंद्री हिदायत के तहत मिशन हाऊस के लिए मकान की तलाश शुरू कर दी इस लिए गालवे Galway में एक इमारत 32 हज़ार पाउंड में ख़रीद ली गई और 26 जनवरी 1989 को मुबल्लिग़ सिलसिला नए मिशन हाऊस में मुंतक़िल हो गए।

हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला ने 29 से 31मार्च 1989 को आयरलैंड की यात्रा फ़रमाई 31 मार्च को हुज़ूर अनवर ने नमाज़-ए-जुमा मिशन हाऊस में पढ़ाई और मिशन के उद्घाटन का ऐलान फ़रमाया। उस नमाज़-ए-जुमा में कुल 29 लोग शामिल हुए। जिसमें आयरलैंड की संख्या 13 थी। इसी दिन शाम Great Southern होटल में एक समारोह रात के खाने का आयोजित किया गया जिस में गालवे के मेयर के अतिरिक्त 48 मेहमानों शामिल हुए। कुछ अख़बारात ने हुज़ूर के इंटरव्यू लिए जो बाद में प्रकाशित हुए।

आयरलैंड में जब जमाअत के मिशन हाऊस का क़ियाम हुआ उस समय जमाअत की मजमूई संख्या केवल 16 थी और अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से आयरलैंड की संख्या 384 तक पहुंच चुकी है। और देश के विभिन्न शहरों Dublin, Limerick, Athlone, Drogheda, Cork, Galway और Portliose में जमाअत के लोग मुक़ीम हैं और यहां की जमाअत बड़ी मुनज़्ज़म, मुस्तहकम और काम करने वाली है और माली क़ुर्बानी में नुमायां है। जमाअत ने वर्ष 2010 में डबलिन शहर में दो लाख अस्सी हज़ार यूरो की लागत से एक इमारत बतौर मिशन हाऊस ख़रीदी है। इस इमारत का निचला हिस्सा बतौर नमाज़ सैंटर प्रयोग होता है और इसके साथ वाला जुड़ा हुआ मकान किराए पर लिया गया है जो लजना के नमाज़ सैंटर और दफ़्तातिर के तौर पर प्रयोग होता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपनी पिछली यात्रा के इस जमाअती सैंटर का नाम "बैयतुल अहद" रखा था।

अब जमाअत आयरलैंड ने मज़ीद माली क़ुर्बानी करते हुए गालवे में जमाअत की पहली मस्जिद "मस्जिद मर्यम" को बनाने की तौफ़ीक़ पाई है। अल्हम्दुलिल्लाह।

आयरलैंड में जबकि जमाअत का निरंतर क़ियाम 1986 ई. में हुआ और मिशन हाऊस, जमाअती सैंटर का क़ियाम 1989 में हुआ परन्तु इस से पूर्व 1926 ई. में एक पहली आइरिश महिला को अहमदियत स्वीकार करने का सौभाग्य मिला। इस महिला का नाम कैथलीन था। वह हज़रत मौलाना अबदुर्रहीम दर्द साहब रज़ियल्लाहु अन्हु की तब्लीग़ से अहमदी हुई और 12 वर्ष की आयु में हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत की और कुछ अरसा हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु के घर भी ठहरीं। हुज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनका नाम हनीफा बेग़म रखा। उन्होंने क़ुरआन-ए-मजीद हज़रत पीर मुहम्मद मंज़ूर साहब से पढ़ा। इसके बाद इस महिला हनीफा बेग़म की शादी सय्यद अब्दुर्रज़ाक शाह साहब मरहूम पुत्र डाक्टर सय्यद अब्दुल सत्तार शाह साहब मरहूम के साथ हुई। आप हज़रत सय्यदा उम्मे ताहिर की भाबी थीं। हनीफा बेग़म साहबा ग्यारह वर्ष तक अपने मियां के साथ कीनीया में रहीं। फिर एक लंबा अरसा क़ादियान में गुज़ारा इसके बाद अपने मियां के साथ ही अहमदाबाद स्टेट सिंध स्थानांतरित हुईं।

हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु जब भी अहमदाबाद स्टेट सिंध तशरीफ़ ले जाते तो सुबह का खाना उन्हीं के घर खाना पसंद फ़रमाते बल्कि जब वापस जाते तो संदेश भेजते कि सुबह ट्रेन टाहली स्टेशन पर रुकेगी वहां नाश्ता तैयार मिलना चाहिए। आप गर्म गर्म नाश्ता तैयार करके स्टेशन भेज देतीं। जैसे ही ट्रेन पहुंचती तैयार नाशता मिल जाता। हुज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत ख़ुश होते और बहुत

शुक्रिया करते।

आप अहमदाबाद स्टेट में रहने के समय ही टाइफाइड से बीमार हुईं और आपका वहीं देहांत हुआ और वहां पर ही मद्फ़ून हैं।

कैथोलिक होने के कारण से यहां आयरलैंड के लोग ईसाइयत में बहुत गंभीर हैं और यह कहा जाता है कि आयरलैंड में कैथोलीज़म वेटीकन Vatican City(अर्थात जहां पोप का क़ियाम है और ईसाइयत का केंद्र है) से भी ज़्यादा है। परन्तु इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हनीफ़ा बेग़म मरहूमा के अतिरिक्त कुछ और सईद फ़ितत आइरिश बाशिंदे भी अहमदियत के नूर से मुनव्वर हुए

आइरिश क़ौम से दूसरी बैअत भी एक महिला की थी। इस महिला का नाम Patricia Coy है। उन्होंने 1965 में अहमदियत को स्वीकार करने का सौभाग्य पाया। और उनकी शादी मारीशस के एक अहमदी मित्र अब्दुल ग़नी साहब से हुई।

1967 ई. में हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस रहमहुल्ला तआला की बर्तानिया यात्रा के समय उन्हों ने जब हुज़ूर रहमहुल्ला से मुलाक़ात की तो उनके जीवन में एक बदलाव पैदा हुआ और अपने ईमान-ओ-इख़लास में इसकदर प्रगति की कि एक लंबा अरसा सदर लजना इमाइल्लाह मारीशस रहीं। वह अब्दुल ग़नी जहांगीर साहब इंचार्ज फ्रैंच डैसक यू.के की माता आदरणीया हैं और मस्जिद मर्यम के उद्घाटन समारोह में शामिल होने के लिए भी आ रही हैं।

आइरिश क़ौम से अहमदियत की आग़ोश में आने वालों में एक मित्र आदरणीय इब्राहीम नोन साहब हैं जो उस समय आयरलैंड में मुबल्लिग़ सिलसिला हैं। बर्तानिया में भी बतौर मुबल्लिग़ सिलसिला काम कर चुके हैं और सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया यू.के भी रह चुके हैं। आपने 1991 में बैअत का सौभाग्य पाया।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इस समय आइरिश अहमदियों की संख्या दस से अधिक है और सभी इख़लास और सेवा में आगे बढ़ रहे हैं।

इस समय भी कुछ आइरिश नौजवान सम्पर्क में हैं और ज़ेर तब्लीग़ हैं और जमाअत के क़रीब हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के मुबारक क़दम इस सरज़मीन पर दूसरी बार पड़े हैं। अब इन शा अल्लाह इस सरज़मीन पर भी सफलताओं और विजय के मार्ग खुलेंगे और जमाअत अहमदिया आयरलैंड प्रगति के एक नए दौर में दाख़िल होगी और दुनिया-भर में फैली हुई दूसरी अक़्वाम की तरह आइरिश क़ौम भी हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के चशमा से तृप्त होगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह छः बजे पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने लंदन केंद्र से प्राप्त होने वाली दफ़्तरी डाक देखी और पत्र और रिपोर्टस पर अपने पवित्र हाथ से हिदायात तहरीर फ़रमाई

फ़ैमिली मुलाक़ातें :-

आज प्रोग्राम के अनुसार फ़ैमिली मुलाक़ातें थीं। मुलाक़ातों का प्रबन्ध होटल Castleknock के एक अपार्टमंट में किया गया था

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ साढ़े ग्यारह बजे पधारेऔर फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं।

आज सुबह के इस सैशन में 29 फ़ैमिलीज़ के 106 लोगों ने मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को बतौर उपहार क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी आयु के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए। इन सभी फ़ैमिलीज़ ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य भी पाया।

मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ डबलिन शहर के अतिरिक्त इर्द-गिर्द के विभिन्न शहरों और इलाक़ों Celbridge, Swords, Lucan, Cavan, NavanऔरDrogheda से आई थीं।

आज मुलाक़ात करने वालों में कुछ ऐसी ख़ुशनसीब फ़ैमिलीज़ भी थीं जो अपनी जीवन में पहली बार अपने प्यारे आक़ा को मिल रही थीं और अत्यधिक क़रीब से अपने आक़ा के दीदार और बरकतों से फ़ैज़याब हो रही थीं। उन के लिए आज का दिन अत्यधिक ख़ुशी का दिन था और अपने प्यारे आक़ा के साथ क़ुरबत के ये कुछ क्षण उनकी सारी जीवन का सरमाया थे। उनकी नसलें भी इस सरमाया को हमेशा क़दर की निगाह से देखेंगी।

मुलाक़ातों का ये प्रोग्राम मध्याह्न दो बजे तक जारी रहा।

आमीन के समारोह

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ इस हाल में तशरीफ़ ले आए जहां नमाज़ जुहर तथा अस्र की अदायगी का प्रबन्ध किया गया था।

नमाज़ों की अदायगी से पूर्व आमीन का समारोह हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने बीस बच्चों और बच्चियों से क़ुरआन-ए-करीम की एक एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई।

निमंलिखित ख़ुशनसीब बच्चियों और बच्चों ने इस समारोह में शमूलियत का सौभाग्य पाया। प्रिय अरूसा महमूद, ईमान बुशरा मुल्क, सुबीका एहसान, ग़ज़ाला हबीब, इलेशाह बट, अनीला असद, प्रिय रौहान मसरूर मलिक, फ़ारान इफ़्तिख़ार, अरमूग़ान मुज़फ़्फ़र, अर्सिलान मलिक, प्रिय वफ़ी अली अहमद, अब्दुल बासित जनजूआ, अर्सिलान अहमद, इब्राहीम जनजूआ, फ़र्साद अहमद कामरान, अहसान, फ़हद इफ़्तिख़ार, स्वीकार अहमद, प्रिय अरीज़ अहमद देश, प्रिय क़वीम अहमद।

आमीन के समारोह के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ जुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपने रिहायशी अपार्टमंट में तशरीफ़ ले गए।

पिछले-पहर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दफ़्तरी मामलों के निवारण में व्यस्त रहे।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार पौने सात बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ पधारे और फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं

आज शाम के इस सैशन में डबलिन Portlaoise, Longford, Waterford, Dundalk और Navan के क्षेत्रों से आने वाली 22 फ़ैमिलीज़ के 96 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इन सभी फ़ैमिलीज़ और लोगों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों और बच्चियों को क़लम प्रदान किए और छोटी आयु के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान की।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम साढ़े आठ बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

शेष आगे ....

★ ★ ★

पृष्ठ01 का शेष

सारी इच्छाओं पर ख़ुदा की प्रतिष्ठा को प्राथमिकता न दे। वली क़रीबी और मित्र को कहते हैं। जो दोस्त (अर्थात ख़ुदा) चाहता है, वही यह भी चाहता है तब यह वली कहलाता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है مَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ (अल् ज़ारियात : 57) चाहिए कि यह ख़ुदा के लिए जोश रखे। फिर यह अपने इंसानी वस्तुओं से ऊपर उठ जाएगा। ख़ुदा के प्रिय लोगों में से बन जाएगा। मुर्दों की तरह नहीं होना चाहिए कि मुर्दे के मुख में एक वस्तु एक तरफ़ से डाली जाती है तो दूसरी तरफ़ से निकल आती है। इसी तरह हृदय की कठोरता के समय कोई चीज़ चाहे कितनी भी अच्छी हो अंदर नहीं जाती। याद रखो कि कोई इबादत और सदक़ा क़बूल नहीं जब तक कि अल्लाह तआला के लिए ज़ाती जोश न हो। जिसके साथ व्यक्ति स्वार्थ की कोई मलूनी न हो, ऐसा हो कि स्वयं भी न जाने कि यह जोश मेरे में क्यों है। बहुत ज़रूरत है कि ऐसे लोग बहुत अधिक पैदा हों, परन्तु सिवाए ख़ुदा के इरादा के कुछ हो नहीं सकता।

(मल् फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 357 से 358 प्रकाशन 2018 क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ12 का शेष

ग़लबा पालेगा। एक निर्धारित संख्या वर्णन फ़रमाई गई है कि अगर सौ हों तो हज़ार पर ग़लबा पालेंगे जो ठीक सम्भव है।

इस आयत में यह वर्णन है कि तत्काल तुम्हारी कमज़ोरी की हालत है। न पूरी ख़ुराक उपलब्ध है न हथियार उपलब्ध हैं। इस लिए तुम अगर सो हो तो दो सो पर ग़लबा पाओगे। लेकिन जब तुम्हारा रोब क़ायम हो जाएगा तो आने वाली नसलों में हज़ार, दस हज़ार पर भी ग़ालिब पा सकोगे। आने वाली नसलों के लिए जो बड़ी फ़तह की पेशगोई फ़रमाई गई है इस की बुनियाद इबतिदाई मोमिनीन ने ही डाली थी।

आरोप नंबर : 2 (n)

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ (सूरः अल् तहरीम, सूरः नंबर 66 आयत नंबर 10) अनुवाद : हे नबी कुफ़्फ़ार से और मुनाफ़क़ीन से जिहाद कर और उनके मुक़ाबला पर सख़्ती कर। और उनका ठिकाना जहन्नुम है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

इस आयत की वज़ाहत करते हुए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं कि जो जिहाद नफ़्स की ख़ातिर नहीं बल्कि केवल अल्लाह तआला की ख़ातिर किया जा रहा हो इस में दुश्मनों से क़िताल के मुक़ाबला पर सख़्ती करने का हुक्म है चाहे दिल कितना ही नरम हो। एक दूसरी आयत से इस सख़्ती का फ़ायदा ये मालूम होता है कि उसके नतीजा में, जो क़िताल में शामिल होने वाले लोग नहीं हैं, वे भी डर जाऐंगे और नाहक़ मुस्लमानों से वध नहीं करेंगे जैसा कि फ़रमाया : فَشَرِّدْ بِهِمْ مَنْ خَلْفَهُمْ

(अल् अनफ़ाल : 58)

आरोप आयत नंबर 2 (w)

وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ اَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۪ وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا (सूरः अल् निसा, सूरः नंबर 4 आयत नंबर 90) अनुवाद : वे चाहते हैं कि काश तुम भी इसी तरह कुफ़्र करो जिस तरह उन्होंने कुफ़्र किया। परिणाम तुम एक ही जैसे हो जाओ। अतः उनमें से कोई दोस्त न बनाया करो यहां तक कि वह अल्लाह की राह में हिज्रत करें। अतः अगर वे पीठ दिखा जाएं तो उनको पकड़ो और उनको क़तल करो जहां कहीं भी तुम उनको पाओ और उनमें से किसी को दोस्त या मददगार न बनाओ।

आरोप नंबर : 2 (x)

قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ (सूरः तौबा सूरः नम्बर 9 आयत नंबर 14) अनुवाद : उनसे लड़ाई करो। अल्लाह उन्हें तुम्हारे हाथों से अज़ाब देगा और उन्हें रुस्वा कर देगा और तुम्हें उनके ख़िलाफ़ नुसरत अता करेगा और मोमिन क़ौम के सीनों को शिफ़ा बख़्शेगा।

आरोप आयत नंबर 2 (z)

وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ (सूरः अल् बकरः, सूरः नंबर 2 आयत नंबर 192) अनुवाद : और (दौरान-ए-क़िताल) उन्हें क़तल करो जहां कहीं भी तुम उन्हें पाओ और उन्हें वहां से निकाल दो-जहाँ से तुम्हें उन्होंने निकाला था। और उपद्रव वध से ज़्यादा खतरनाक होता है। और उनसे मस्जिद हराम के पास क़िताल न करो यहां तक कि वे तुमसे वहां क़िताल करें। अतः अगर वे तुमसे क़िताल करें तो फिर तुम उन को क़तल करो। काफ़िरों की ऐसी ही दंड होता है।

ऊपर वर्णित समस्त आयात जिनसे कुफ़्फ़ार पर सख़्ती करने का नतीजा अख़ज़ किया गया है। इसके उत्तर में हज़रत जमाअत अहमदिया के संस्थापक मुस्लिमा की एक तहरीर दर्ज की जा रही है। इस में वर्णित आयात और उनसे मिलती जुलती आयात जो क़ुरआन-ए-मजीद में हैं। इन से नकरात्मक नतीजा अख़ज़ करने वालों के लिए काफ़ी और शाफ़ी उत्तर है।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "इसके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम गुप्त रूप में मदीना में पहुंचे। और मदीना के अक्सर लोगों ने आपको क़बूल कर लिया। इस पर मक्का वालों का गुस्सा भड़का और अफ़सोस किया कि हमारा शिकार हमारे हाथ से निकल गया। और फिर क्या था। दिन रात उन्ही योजनाओं में लगे कि किस आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क़तल कर दें और कुछ थोड़ा गिरोह मक्का वालों का कि जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान लाया था वह भी मक्का से हिज्रत करके मुख़्तलिफ़ देशों की तरफ़ चले गए। कुछ ने हब्शा के बादशाह की पनाह ले ली थी और कुछ मक्का में ही रहे। इस लिए की वे सफ़र करने के लिए सफ़र का सामान आहार नहीं रखते थे। और वे बहुत दुख दिए गए। क़ुरआन शरीफ़ में उनका वर्णन है कि क्यूँ-कर वे दिन रात फ़र्याद करते थे।

और जब कुफ़्फ़ार क़ुरैश का हद से ज़्यादा ज़ुलम बढ़ गया, और उन्हों ने ग़रीब औरतों और यतीम बच्चों को क़तल करना शुरू किया और कुछ औरतों को ऐसी बेदर्दी से मारा कि इन की दोनों टांगें दो रस्सियों से बांध कर दो उंटों के साथ वे रस्सियाँ ख़ूब जकड़ दीं और उन ऊंटों को दो मुख़्तलिफ़ सिम्तों में दौड़ाया और इस तरह पर वे औरतें दो टुकड़े हो कर मर गईं।

जब बेरहम काफ़िरों का ज़ुलम इस हद तक पहुंच गया। ख़ुदा ने जो आख़िर अपने बंदों पर रहम करता है अपने रसूल पर अपनी वह्यी नाज़िल की कि मज़लूमों की फ़र्याद मेरे तक पहुंच गई। आज मैं इजाज़त देता हूँ कि तुम भी उनका मुक़ाबला करो और याद रखो कि जो लोग बेगुनाह लोगों पर तलवार उठाते हैं। वे तलवार से ही हलाक किए जाऐंगे। परन्तु तुम कोई ज़्यादती मत करो कि ख़ुदा ज़्यादती करने वालों को दोस्त नहीं रखता।

यह है हक़ीक़त इस्लाम के जिहाद की। जिसको निहायत ज़ुलम से बुरे पैराया में वर्णन किया गया है। निसंदेह ख़ुदा दयालु है। परन्तु जब किसी क़ौम की शरारत हद से गुज़र जाती है। तो वह ज़ालिम को बिना दंड के नहीं छोड़ता।और आप उनके लिए तबाही के सामान पैदा कर देता है। मैं नहीं जानता कि हमारे मुख़ालिफ़ों ने कहाँ से और किस से सुन लिया कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला है। ख़ुदा तो क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाता है : لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ (सूरः अल् बक़रा, सूरः नंबर 2 आयत 257) अर्थात इस्लाम धर्म में जबर नहीं। तो फिर किस ने जबर का हुक्म दिया। और जबर के कौन से सामान थे। और क्या वे लोग जो जबर से मुस्लमान किए जाते हैं उनका यही सिदक़ और यही ईमान होता है कि बग़ैर किसी तनख़्वाह पाने के बावजूद दो तीन सौ आदमी होने के हज़ारों आदमियों का मुक़ाबला करें और जब हज़ार तक पहुंच जाएं तो कई लाख दुश्मन को शिकस्त दे दें। और दीन को दुश्मन के हमलों से बचाने के लिए भेड़ों बकरियों की तरह सिर कटा दें। और इस्लाम की सच्चाई पर अपने ख़ून से मोहरें कर दें। और ख़ुदा की तौहीद के फैलाने के लिए ऐसे आशिक़ हों कि दरवेशाना तौर पर सख़्ती उठा कर अफ़्रीक़ा के रेगिस्तान तक पहुँचें और उस मुल्क में इस्लाम को फैला दें। और फिर हर किस्म के कष्ट उठा कर चीन तक पहुंचें न जंग के तौर पर बल्कि केवल दरवेशाना तौर पर। और उस मुल्क में पहुंच कर दावत-ए-इसलाम करें। जिसका नतीजा यह हुआ कि उनके बाबरकत उपदेश से कई करोड़ मुस्लमान उस ज़मीन में पैदा हो जाएं। और फिर टाट पोश दरवेशों के रंग में भारत में आएं और बहुत से हिस्सा आर्या वर्त को इस्लाम से मुशर्रफ़ कर दें और यूरोप की हदूद तक ला इलाह इल्लला की आवाज़ पहुंचा दें। तुम ईमान से कहो कि क्या ये काम उन लोगों का है जो जबरन मुसलमान किए जाते हैं। जिनका दिल काफ़िर और ज़बान मोमिन होती है? नहीं बल्कि ये उन लोगों के काम हैं जिनके दिल ईमान के नूर से भर जाते हैं। और जिन के दिलों में ख़ुदा ही ख़ुदा होता है।"

(पैग़ाम-ए-सुलह, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 467)

(शेष आगे ...)

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 03 March 2022 Issue No.9

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त करने वाला अल्लाह तआला है
(क़ुरआन-ए-मजीद की 26 आयतों पर आरोपों के उत्तर)

मुहम्मद हमीद कौसर, नाज़िर दावत इलाल्लाह मर्कज़िया उत्तर भारत, क़ादियान

(भाग-6)

आरोप आयत नंबर 2(d)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ (सूरः अल् तौबा, सूरः नंबर 9 आयत नंबर 123) अनुवाद : हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अपने उन क़रीबियों से भी लड़ो जो कुफ़्फ़ार में से हैं और चाहिए कि वे तुम्हारे अन्दर सख़्ती महसूस करें और जान लो कि अल्लाह मुत्तक़ियों के साथ है।

आरोप आयत नंबर 2(f)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَآءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ (सूरः अल् तौबाा, सूरः नंबर 9 आयत 23) अनुवाद हे वे लोगो जो ईमान लाए हो तुम अपने बाप दादा को और अपने भाईयों को मित्र न बनाओ अगर उन्होंने ईमान की बजाए कुफ़्र पसंद कर लिया हो। और तुम में से जो भी उन्हें मित्र बनाएंगे तो यही हैं जो अत्याचारी लोग हैं।

इस सिलसिला में एक उदाहरण महाभारत के जंग की दी जा चुकी है जिस में कौरव और पांडव क़रीबी रिश्तेदार थे परन्तु कृष्ण जी महाराज ने इस जंग में पांडवों का साथ दिया और कोरवों का मुक़ाबला किया। क्योंकि हालात की मांग उस वक़्त उसी कार्य को करने की था।

ईसा मसीह (अलैहिस्सलाम) के क़रीबियों ने जब उस का इन्कार कर दिया और उनकी तक़ज़ीब की तो मसीह ने उन्हें कहा :

(1) हे साँपों के बच्चो तुम बुरे हो कर क्योंकर अच्छी बातें कह सकते हो। (इंजील मति, बाब 12-34)

(2) हे साँपो हे अफ़ई के बच्चो तुम जहन्नुमी सज़ा से क्योंकर बचोगे (इंजील मति बाब 33/23)

याद रहे अल्लाह तआला जिस किसी नबी और रसूल को अपने ज़माने के लोगों की इस्लाह के लिए भेजता था तो वे नबी इस्लाह के बहुत से मुनासिब तरीक़ इख़्तियार करता था। यह तरीक़ उन में से एक है।

आरोप आयत नंबर 2 (i)

مَّلْعُوْنِيْنَ ۚ اَيْنَمَا ثُقِفُوْٓا اُخِذُوْا وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا (सूरः अल् अहज़ाब, सूरत नंबर 33 आयत 62) अनुवाद : (ये) धुतकारे हुए, जहां कहीं भी पाए जाएं पकड़ लिए जाएं और अच्छी तरह क़तल किए जाएं।

इस आयत की वज़ाहत करते हुए हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं इन आयात में मुनाफ़क़ीन और यहूद में से उन फ़िल्ला परदाज़ों का वर्णन है जो मदीना में मुस्लमानों के ख़िलाफ़ झूठी मन घड़त बातें फैलाते रहते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अल्लाह ने वादा फ़रमाया है कि तू उन पर ग़ालिब आ जाएगा और यह तेरे शहर को छोड़ कर चले जाऐंगे। उस वक़्त यह अल्लाह की लानत के नीचे होंगे और ऐसे हालात होंगे कि जहां कहीं भी वह पाए जाएं उनका दोषारोपण करना और क़तल करना जायज़ होगा।

आरोप आयत नंबर 2(k)

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ۭ اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ (सूरः अल् सज्दः, सूरः नंबर 32 आयत 23) अनुवाद और कौन इस से ज़्यादा ज़ालिम हो सकता है जो अपने रब की आयात के द्वारा अच्छी तरह नसीहत किया जाए फिर भी उन से मुँह मोड़ ले? यक़ीनन हम मुजरिमों से बदला लेने वाले हैं।

आरोप आयत नंबर 2 (o)

فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (सूरः ह मीम अल् सज्दः सूरः नंबर 41आयत नंबर 28) अनुवादः अतः हम यक़ीनन उन लोगों को जिन्हों ने कुफ़्र किया सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएंगे और उन्हें उन के बदतरीन आमाल का अवश्य दंड देंगे।

आरोप आयत नंबर 2(p)

ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۭ لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ ۭ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ (सूरः ह मीम अल् सज्दः सूरः नंबर 41आयत 29) अनुवाद : यह हो कर रहने वाली बात है कि अल्लाह के दुश्मनों का बदला आग है। उनके लिए इस में देर तक रहने का घर है। यह जज़ा है उसकी जो हमारी आयात का वह जान बूझ कर इन्कार किया करते थे।

आरोप नंबर : 2(s)

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ۭ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ (सूरः नम्बर 866) अनुवाद हे नबी मोमिनों को क़िताल की तरग़ीब दे। अगर तुम में से बीस सब्र करने वाले हों तो वे दो सौ पर ग़ालिब आ जाऐंगे और अगर तुम में से एक सौ (सब्र करने वाले हों) तो वे कुफ़्र करने वालों के एक हज़ार पर ग़ालिब आ जाऐंगे क्योंकि वे ऐसे लोग हैं जो कुछ समझते नहीं।

इस आयत की वज़ाहत करते हुए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हुक्म फ़रमाया गया है कि मोमिनों को (लड़ाई) के लिए तैयार करें। जबकि वे थोड़े हैं लेकिन अल्लाह तआला का यह वादा है कि वे अपने से दस गुना ज़्यादा संख्या पर ग़ालिब आ सकते हैं। लेकिन यह मुराद नहीं कि हर अकेला व्यक्ति अपने से दस गुना ज़्यादा लोगों पर

शेष पृष्ठ 11 पर

Z.A. Tahir Khan
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Z.A.TAHIR KHAN
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad